Prakash College

Name : Niraj pal

Class / Div : 2nd/A-1 Roll No.: 78

Article Title : My College days

Those were the best days of my life,
When fun and frolic was rife.
A refreshing realm of knowledge,
That was my College.

Funny friends and loving lecturers,
Freaky fundas and flexible study hours.
Riddles and rumours, gossips and giggles - umpteem
Added spice to the junk I bagged at the College

I majored in English literature,
And the subject suited my sensitive nature.
I was initiated into the world of stories, poem and play,
Each lecture set my imagination ablaze.

My College was a literary paradise,
Where I learnt to critically analyze,
Every text that came my way,
Be it poetry, prose or play.

Free from the fetters of School,
I willingly jumped into the knowledge pool.
Where education was mixed with entertainment,
At College learning was never a punishment.

Prakash College

Name : Swadhin Roy

Class / Div : SYIC | A-1 Roll No.: 414

Article Title : Don't Quit

When things go wrong as they sometimes will,
When the road you're trudging seems all up hill,
When the funds are low & the debts are high
And you want to smile, but you down a bit,
Rest if you must, but don't you quit.

Life is strange with its twists & turns
As every one of us sometimes learns
And many a failure comes about
When he might have won had he stuck it out;
Don't give up though the pace seems slow-
You may succeed with another blow.

Success is failure turned inside out -
The silver tint of the clouds of doubt,
And you never can tell just how close you are,
It may be near when it seems so far;-
So stick to the fight when you're hardest hit-
It's when things seems worst that you must not quit.

For all the sad words of tounge or pen
The saddest are these : "It might have been".

- John Greenleaf Whittier
(1807 - 1892)

Name : Gautami Kushal Kamble

Class / Div : XII A (GYJC) Roll No.: 72

Prakash College

Article Title : पाऊस

हा आला आनंद देणारा पाऊस. ह्याने माणसांना तर आनंद होतोच पण पशु, पक्षी हे देखील उल्हासित होतात. झाडे पाने तर आनंदाने जसे पावसाच्या तालावर नाचतात. फक्त पावसातच ही हिरवीगार होतात. टवटवीत होऊन आनंद व्यक्त करतात. पृथ्वी जसा सुंदर हिरवा शालू नेसून प्रसन्न मुद्रेने आपला आनंद व्यक्त करत असते. ह्या हिरव्यागार धरणी कडे बघतच बसावेसे वाटते. सकाळी पडणारे ते हलकेसे धुके. मधुनच थेणारी ती रिमझिम, कधी हळूच डोकावणारे तो सूर्यप्रकाश आणि हो सप्तरंगांची उधळण करणारा तो इंद्रधनुष्य, ज्याला बघण्यासाठी आपण आतुर असतो. फक्त का तो नजरेस पडला कि जसे स्वर्ग सुख! लहान मोठ्या सगळ्यांना मोहित करणारे हे इंद्रधनुष्य म्हणजे जसे आपल्या डोळ्यांना मिळणारा निसर्गाचा फक 'नायब तोहफाचा'! उन्हाळ्यात जे पक्षी चिडी चुप असतात तेच ह्या पावसाळ्यात गाणे गाऊन देवाच्या ह्या देणगीचे धन्यवाद करतात. जंगल तर पक्ष्यांच्या किलकिलाटाने नुसत दुमदुमुन जाते व जनावरे उल्हासित होऊन निरनिराळे आवाज काढुन आपला आनंद व्यक्त करतात.

हाच तो पाऊस.

Name : Ishani Bhawal

Class / Div : SYJC / A-1 Roll No.: 30

Prakash College

Article Title :

निर्णय

आयुष्यातले निर्णय चुकतात
आणि मग आयुष्याचं चुकत जाते...
कधी-कधी तर प्रश्न कळत नाही
आणि उत्तरही चुकत जाते...
सोडवताना वाटते, सुटत गेली गुंता...
पण प्रत्येक वेळी एक नवीन गाठ बनत जाते...
दाखवणाऱ्याला वाट मोहित नसते...
चालणाऱ्याचे ध्येय मात्र हरवून जाते...
काही गोष्टी वाटत तितक्या सोप्या नसतात...
"अनुभव" म्हणजे काय हे तेव्हाच कळते...

जेव्हा एखादी "ठेच" काळजाला लागते...!

Prakash College

Name : Disha Manish Gorivale

Class / Div : SYJC B Roll No.: 15

Article Title : गुरु

गुरु है तो प्यार है,
गुरु है तो संसार है,
घने अन्धकार में भी,
दीपक का प्रकाश है,
मन का विश्वास है,
दिल का एहसास है,
सुन्दार सा गीत है,
हर शब्द मे ही प्रीत है,
गुरु के ही हाथों में,
संसार की कमान है,
गुरु के चरणों को शत शत प्रणाम है.....

गुरु है तो विश्वास है,
गुरु है तो सब पास है,
गुरु से ही आस है,
गुरु जो अपने पास है,
तो मंजिल की क्या बात है,
एक सुन्दर सा एहसास है,
ना हो कोई लक्ष्य अधूरा,
सब कुछ अपने हाथ है,
गुरु सुन्दर साज है,
गुरु शिष्य का सरताज है,
गुरु वो जो कभी मन को ना होने दे
शाम है....
गुरु के चरणों को शत बात
प्रणाम है....

Name : Rakhi Kewat

Class / Div : S.Y.B.C [A] Roll No.: 43

Article Title : विनम्रता विद्यार्थी का सबसे बड़ा गुण है।

Prakash College

विनम्रता विद्यार्थी का सबसे बड़ा गुण है

[डॉ. रामसिंह यादव]

पुराने समय की बात है एक गुरुकुल में दूर-दूर से विद्याध्ययन के लिए विद्यार्थी आया करते थे। उनमें बड़े-बड़े सेठ, साहूकार, अमीर-गरीब, हरिजन-दलित सबके बच्चे एक साथ आज की तरह पढ़ते थे।

उसी गुरुकुल (विद्यालय) में उन दिनों एक बहुत बड़े प्रतिष्ठित सम्पन्न सेठ का पुत्र भी अध्ययन कर रहा था। जिसका नाम राहुल था। जिसका नाम राहुल था। उसके सभी साथी विद्याध्ययन के पश्चात अपने अपने घर चले गए लेकिन राहुल को गुरुजी ने घर वापस लौटने की अनुमति नहीं दी थी।

सेठ ने अपने नौकर को गुरुकुल अपने पुत्र राहुल को वहाँ से लाने बुलाने के लिए भेजा। लेकिन गुरुजी ने राहुल को घर भेजने से मना कर दिया। तब सेठ स्वयं उसे लेने को गुरुजी ने सेठजी का स्वागत किया। सेठ ने गुरुजी से पूछा - मेरे पुत्र राहुल का अध्ययन पूरा हो गया है? फिर भी आपने उसे घर लौटने की अनुमति नहीं दी है, आखिर क्यों? मैं यहीं कुछ जानने के लिए आपके पास आया हूँ।

गुरुजी ने कहा, "आपका पुत्र सर्वश्रेष्ठ रहा है, लेकिन हमें उसकी एक परीक्षा और लेना है, तभी वह सच्चा विद्वान पढ़ा-लिखा योग्य विद्यार्थी समझा जाएगा।

Prakash College

Name : Divya Marumuthu Harijan

Class / Div : C XII (SVIC) Roll No.: 70

Article Title : விண்ணுடல்

இதழ்க்கொழுந்தின் மண்டிய மலையில் பெருகிறது ஒரு
நதி அதன் கரைகளில் வளைந்து நிற்பவைகளைத்
தொட்டுச்செல்கின்றன பசுமையான மரத்தின் கிளைகள்.
அதனுள் கனிந்த பழங்கள் பெய்யுங்கால் மிதந்து
விதைகளை வெளியேற்றுகின்றன மலைகளில் மண்ணைப்
பற்றி இருக்கிய நீர் முனைகளில் பருகி விழுகிறது
அருவியாய் நீர்த்துளிகளின் அழகுகளில் இறுதி மழைத்
மழை நனைக்கிறது வெட்டையில் திரும்பும்
புல் தொடர்ந்திருக்கையில்

மாலையின் மெருகு வானவில்லுக்கு
தெறிக்கிறது இயற்கை காட்டில் வானம்
இழைக்கு வண்ணங்கள் பல கொண்ட அதைக்
அது இரண்டு அழகில் வெள்ளை நிலவைக்
கொடுக்கும் கொள்கிறது அதனில் இயற்கை
தன் உடலைக் கட்டுகிறது.

... அழகிய
கனிமொழி